

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ अठासी

राफिया से पैनियम तक: प्राचीन युद्धों के भविष्यवाणी-संबंधी महत्व का अनावरण

Jeff Pippenger

2024-04-18

राफिया का युद्ध और पैनियम का युद्ध दो अलग-अलग ऐतिहासिक घटनाएँ हैं जो भिन्न समय और संदर्भों में हुईं, परंतु दोनों का प्राचीन यहूदिया और उसके आस-पास के क्षेत्रों के इतिहास में महत्व है। राफिया का युद्ध 217 ईसा पूर्व में हुआ। पैनियम का युद्ध 200 ईसा पूर्व में सेल्यूकिक राज्य (उत्तरी राजा) और टॉलेमिक राज्य (दक्षिणी राजा) के बीच हुआ। इन दोनों युद्धों का उल्लेख दानियेल के ग्यारहवें अध्याय की ग्यारहवीं से पंद्रहवीं आयतों में किया गया है। ये दोनों युद्ध 167 ईसा पूर्व के मकाबी विद्रोह से पहले हुए थे।

पैनियम का युद्ध अपना नाम पास स्थित भौगोलिक विशेषता पैनियम पर्वत से, जहाँ संघर्ष हुआ था, लिया था। पैनियम नाम यूनानी देवता पैन से निकला है, जिनके लिए वहाँ एक मंदिर समर्पित था। पैन की उपासना से जुड़े होने के कारण उस स्थल को पैनियम कहा जाता था। मंदिर परिसर को अक्सर 'पैन का पवित्र स्थल' कहा जाता था, जो देवता पैन को समर्पित धार्मिक भक्ति और उपासना के स्थान के रूप में उसकी भूमिका को रेखांकित करता था।

"Nymphaeum" शब्द प्राचीन यूनानी और रोमन धर्म में जल-अप्सराओं को समर्पित स्मारक या उपासना-स्थल को संदर्भित करता है। पैनियम के मंदिर परिसर में एक गुफा और प्राकृतिक झरना था, जिनमें अप्सराओं के वास होने का विश्वास था; इसलिए उसे कभी-कभी 'पैनियम का Nymphaeum' भी कहा जाता था।

हेरोद महान के पुत्र हेरोद फिलिप द्वारा शहर के पुनर्निर्माण और विस्तार के बाद, इसे रोमी सम्राट सीज़र ऑगस्टस और स्वयं हेरोद फिलिप के सम्मान में कैसरिया फिलिप्पी कहा जाने लगा। मंदिर परिसर इस शहर के भीतर एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र था।

सम्राट ऑगस्टस के शासनकाल के दौरान, मंदिर को ऑगस्टस के सम्मान में फिर से समर्पित किया गया या उसका नाम बदल दिया गया, जो शाही पंथ और रोमन धार्मिक प्रथाओं का स्थानीय धार्मिक परिदृश्य में समेकन दर्शाता था। प्राचीन नगर कैसरिया फिलिप्पी के निकट का क्षेत्र, जहाँ पान का मंदिर स्थित था, को कभी-कभी "नरक के द्वार" या "हादेस के द्वार" कहा जाता था।

दानियेल अध्याय ग्यारह के पद सोलह से उन्नीस में उन तीन भौगोलिक क्षेत्रों का चित्रण है जिन्हें मूर्तिपूजक रोम को बाइबिल की भविष्यवाणी के चौथे राज्य और इसी अध्याय के 'उत्तर का राजा' के रूप में स्थापित होने के लिए जीतना था। पद सोलह में यह बताया गया है कि रोमी सेनापति पॉपेई ने 65 ई.पू. में सीरिया और फिर 63 ई.पू. में यरूशलेम को जीत लिया। पद सत्रह से उन्नीस में जूलियस सीज़र द्वारा मिस्र पर विजय, जो तीन बाधाओं में से तीसरी थी, का उल्लेख है। 31 ई.पू. में एक्टियम का युद्ध दानियेल अध्याय ग्यारह के पद चौबीस की पूर्ति में उन तीन सौ साठ वर्षों की शुरुआत को चिह्नित करता है जिनमें मूर्तिपूजक रोम ने सर्वोच्च रूप से शासन किया।

बीसवें पद में ऑगस्टस सीज़र के शासनकाल को चिह्नित किया गया है, और उसी इतिहास में यीशु का जन्म हुआ। फिर इक्कीसवें और बाईसवें पद में दुष्ट टाइबेरियस सीज़र के शासनकाल की पहचान की गई है, इस प्रकार मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने को चिह्नित किया गया है। तेईसवें पद में वह संधि चिह्नित है जो मकाबी यहूदियों ने मूर्तिपूजक रोम के साथ की थी, और इस प्रकार पद ग्यारह में आरंभ हुआ इतिहास का प्रवाह रुक जाता है, और ऐतिहासिक वर्णन 161 ईसा पूर्व से 158 ईसा पूर्व के काल में वापस चला जाता है।

तेईसवीं आयत मकाबियों की वंश-रेखा का प्रतिनिधित्व करती है, और यद्यपि वह उनकी भविष्यवाणी-संबंधी वंशक्रम के सभी विवरण नहीं देती, इतिहास का अभिलेख देता है। 217 ईसा पूर्व में राफिया का युद्ध हुआ, और उसके बाद

मिस्र में एक बाल-राजा के होने से देश असुरक्षित रह गया। 200 ईसा पूर्व में जब सेल्यूकिड और यूनानी राजाओं ने उस बाल-राजा से निपटने की योजनाएँ बनाई, तब रोम ने इतिहास में हस्तक्षेप किया और मिस्री बाल-राजा का रक्षक बन गया। उसी वर्ष पानियम का युद्ध हुआ। फिर 167 ईसा पूर्व में मकाबियों का छापामार युद्ध आरंभ हुआ।

मकाबी विद्रोह 167 ईसा पूर्व में मोदीन में शुरू हुआ, और इसमें मकाबियों ने न केवल सेल्यूकिड साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई लड़ी, बल्कि उन यहूदियों के खिलाफ भी, जिन्हें वे सेल्यूकिडों के साथ गठजोड़ में मानते थे। यह विद्रोह धार्मिक प्रेरणा से था, और इसे आंतरिक तथा बाहरी शत्रु के विरुद्ध चलाया गया। 164 ईसा पूर्व में मकाबियों ने मंदिर को पुनः समर्पित किया, और इस घटना का स्मरण यहूदी पर्व हनुक्का में किया जाता है। उसी वर्ष कुख्यात अन्तियोकुस एपिफेनीस की मृत्यु हुई। इसके बाद 161 ईसा पूर्व से 158 ईसा पूर्व तक पद तेईस में उल्लिखित "संधि" रोम के साथ की गई।

मक्काबियों, उनके विद्रोह और रोम के साथ उनके गठबंधन का एकमात्र प्रत्यक्ष संदर्भ तेईसवें पद में मिलता है, परंतु जिस वंश को हस्मोनियन राजवंश कहा जाता है, उसका इतिहास 167 ईसा पूर्व मोडेइन में शुरू हुआ और क्रूस के समय तक जारी रहा। हस्मोनियन राजवंश के अंतिम प्रतिनिधि मसीह के समय के फरीसी थे। अतः मक्काबियों द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए धर्मत्यागी यहूदी धर्म के इतिहास की एक भविष्यवाणी की रेखा है, जो 167 ईसा पूर्व मोडेइन के विद्रोह से शुरू होती है और जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया तब पद इक्कीस और बाइस में समाप्त होती है।

उनका इतिहास पद सोलह में एक निर्णायक मोड़ पर पहुँचा, जब रोम ने पहली बार, पोम्पेय के द्वारा, यरूशलेम पर विजय प्राप्त की। उस समय यरूशलेम पर यह विनाश लाने का उसका मुख्य कारण हस्मोनी वंश के दो गुटों के बीच का विवाद था। उस समय से (63 ईसा पूर्व) यहूदा रोमी शासन के अधीन रहा। मक्काबियों का हस्मोनी वंश, भविष्यवाणी के अनुसार, 167 ईसा पूर्व मोडीन के युद्ध से आरंभ होता है, और 63 ईसा पूर्व में रोम की अधीनता में आ जाता है। उस इतिहास की शुरुआत के थोड़े ही समय बाद मक्काबियों ने 161 ईसा पूर्व से 158 ईसा पूर्व तक रोम के साथ एक गठबंधन किया। वे 63 ईसा पूर्व से रोम के अधीन रहे, क्रूस के समय तक, और अंततः 70 ईस्वी में यरूशलेम के अंतिम विनाश तक।

मक्काबियों की भविष्यसूचक रेखा धर्मत्यागी यहूदी धर्म की रेखा है, और इसलिए वह धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद की रेखा का प्रतीक है। पानियम के युद्ध से लेकर पद सोलह के रविवार के कानून तक, 200 ईसा पूर्व, 167 ईसा पूर्व, 164 ईसा पूर्व की भविष्यसूचक घटनाएँ, और 161 ईसा पूर्व से 158 ईसा पूर्व तक की संधि, धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद के इतिहास में दोहराई जाएँगी। ये मार्गचिह्न रविवार के कानून से पूर्व, सात में से जो आठवाँ राष्ट्रपति है, उसके इतिहास में घटित होंगे। 200 ईसा पूर्व, 167 ईसा पूर्व के संबंध में, गणतांत्रिक सींग की बाहरी रेखा का प्रतिनिधित्व करता है, और 167 ईसा पूर्व धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंट सींग की आंतरिक रेखा का प्रतिनिधित्व करता है।

ये मार्गचिह्न हस्मोनियन राजवंश की ऐतिहासिक धारा के भीतर मूलतः छिपे हुए हैं, फिर भी दानिय्येल अध्याय ग्यारह ८ चालीसवें पद के छिपे हुए इतिहास का हिस्सा बनते हैं। यह एक ऐसी कड़ी है जो 'अंतिम दिनों से संबंधित दानिय्येल की भविष्यवाणी के उस भाग' का अंग है।

यह तथ्य कि यहूदी धर्म मक्काबियों के विद्रोह की स्मृति में हनुक्का मनाता है, मक्काबियों को धर्मी ठहराता नहीं। विद्रोह के कारण शेखीना सत्तर वर्षों की बंधुवाई के बाद जो मंदिर पुनर्निर्मित हुआ था, उसमें कभी लौटी ही नहीं। अंतिम भविष्यवाणी संदेश मक्काबियों से लगभग दो शताब्दियाँ पहले मलाकी के माध्यम से आया। मक्काबियों का इतिहास बताता है कि उन्होंने अपने राजनीतिक नेताओं को महायाजक के रूप में भी कार्य करने की अनुमति दी—वही पाप जिसका प्रयत्न मिस्री प्टोलेमी ने किया था, और जिसका प्रयत्न राजा उज्जियाह ने भी किया। परंपरा बताती है कि प्टोलेमी को उस अपवित्र कृत्य से रोकने के लिए परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया, और परमेश्वर का वचन सीधे बताता है कि जब राजा उज्जियाह ने याजक और राजा का काम करने का प्रयत्न किया तो परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया। उनके वंश का अंतिम फल फरीसी थे। आधुनिक यहूदी धर्म के यहूदी उनके प्रति जो ऐतिहासिक श्रद्धा रखते हैं, उसके बावजूद मक्काबियों को धर्मनिष्ठा का प्रतीक मान लेने का कोई कारण नहीं है।

प्रोटेस्टेंट सुधार-आंदोलन लूथर के समय में आरंभ हुआ, और वह एक प्रगतिशील विकास था। यह कोई नई परंपरा नहीं थी, क्योंकि यीशु और उनके शिष्य प्रोटेस्टेंट थे; यह इतिहास के अंधकार में एक जागरण था, जिसमें लूथर और अन्य सुधारक जागृत किए गए। उस प्रगतिशील सुधार का चरम मिलराइट आंदोलन था। परमेश्वर का उद्देश्य केवल प्रारंभिक सुधारकों को बाबुल के पापों के प्रति जगाना ही नहीं था, बल्कि वह उन्हें अपनी व्यवस्था की पूर्ण समझ और स्वर्गीय पवित्रस्थान में अपने कार्य की समझ तक ले आना चाहता था। 19 अप्रैल, 1844 को प्रोटेस्टेंटों ने सुधार की बढ़ती हुई ज्योति को अस्वीकार कर दिया और धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद बन गए।

तत्पश्चात् विश्वासी मिलराइटों को "चोगा दिया गया" और उन्हें अति-पवित्र स्थान में इस कार्य को पूरा करने के लिए निर्देशित किया गया ताकि वे परिपक्व प्रोटेस्टेंट मसीही बन सकें। 1863 में, जिन्हें चोगा दिया गया था, उन्होंने अवज्ञा के कारण प्रोटेस्टेंटवाद का चोगा अलग रख दिया और लाओदीकिया का चोगा धारण कर लिया। एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी की अंतिम अवधि में, जो 11 सितम्बर, 2001 के बाईस वर्ष बाद, 2023 में आरम्भ हुई, यहूदा के गोत्र का सिंह दानिय्येल अध्याय ग्यारह के पद चालीस के छिपे हुए इतिहास को पूरा करने वाले सत्यों की मुहर खोल रहा है, जो 1989 में सोवियत संघ के पतन से लेकर शीघ्र आने वाले रविवार के कानून तक का इतिहास है। यह करते हुए, उसने धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद के प्रतीक के रूप में धर्मत्यागी यहूदी धर्म के इतिहास की मुहर खोल दी है।

परमेश्वर के धर्मत्यागी लोगों की दोनों धाराएँ—चाहे वे शाब्दिक यहूदा की हों या आध्यात्मिक यहूदा की (दोनों महिमामय देश)—यरूशलेम पर विजय के साथ समाप्त होती हैं: पहली 63 ई.पू. में, और दूसरी शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय। दोनों धाराएँ ऐसे युद्ध का प्रतिनिधित्व करती हैं जो भ्रमित धार्मिक मान्यताओं से प्रेरित है। दोनों यूनान के धार्मिक दर्शन के विरुद्ध एक युद्ध को दर्शाती हैं, और दोनों का अंत धर्मत्यागियों के रोम के अधीन हो जाने पर होता है। मैं पद चालीस के तीन युद्धों को 1989 में सोवियत संघ के पतन, यूक्रेन युद्ध, और रविवार के कानून के समय पैनियम का प्रतिनिधि ठहराता हूँ, ताकि उन तीन युद्धों और तीन विश्वयुद्धों के बीच भेद स्पष्ट हो सके।

ईश्वर के वचन ने आसन्न खतरे की चेतावनी दे दी है; यदि इसे अनसुना कर दिया गया, तो प्रोटेस्टेंट जगत को रोम के वास्तविक उद्देश्यों का पता तभी चलेगा जब फंदे से बच निकलना बहुत देर हो चुका होगा। वह चुपचाप शक्ति हासिल कर रही है। उसके सिद्धांत विधायी सभागृहों में, चर्चों में और मनुष्यों के हृदयों में अपना प्रभाव डाल रहे हैं। वह अपने ऊँचे और विशाल भवन खड़े करती जा रही है, जिनके गुप्त कक्षों में उसके पूर्व उत्पीड़नों की पुनरावृत्ति होगी। गुप्त रूप से और बिना संदेह उत्पन्न किए वह अपनी शक्तियों को मजबूत कर रही है, ताकि जब उसके प्रहार का समय आए, वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सके। उसे केवल अनुकूल स्थिति चाहिए, और वह उसे पहले से ही मिल रही है। हम शीघ्र ही देखेंगे और महसूस करेंगे कि रोमन तत्व का उद्देश्य क्या है। जो कोई भी ईश्वर के वचन पर विश्वास करेगा और उसका पालन करेगा, उसी कारण उसे निंदा और उत्पीड़न का सामना करना पड़ेगा। द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सि, 581.

दसवीं आयत से, जो 1989 में सोवियत संघ के पतन की पहचान करती है, पंद्रहवीं आयत में पानियम के युद्ध तक, पोप की सत्ता "अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए, जब उसके वार करने का समय आएगा, अपने बलों को मजबूत करती रही है।" ये आयतें उन भविष्यसूचक परिस्थितियों की पहचान करती हैं जो पोप की सत्ता द्वारा तैयार किया गया "फंदा" हैं, जिससे "बचना" असंभव होगा। अंतिम भिड़ंत में, जिसका प्रतिनिधित्व पानियम के युद्ध द्वारा होता है, संयुक्त राज्य अमेरिका में पशु की प्रतिमा का निर्माण होगा। उस प्रतिमा का निर्माण अंतिम दिनों में परमेश्वर के लोगों के लिए अंतिम परीक्षा है।

प्रभु ने मुझे स्पष्ट रूप से दिखाया है कि अनुग्रह के काल के समाप्त होने से पहले पशु की प्रतिमा गठित की जाएगी; क्योंकि यह परमेश्वर की प्रजा के लिए वह महान परीक्षा होगी, जिसके द्वारा उनकी अनन्त नियति का निर्णय किया जाएगा। ... प्रकाशितवाक्य 13 में यह विषय स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है; [प्रकाशितवाक्य 13:11-17, उद्धृत].

“यह वह परीक्षा है जिससे परमेश्वर की प्रजा को मुहर लगाए जाने से पहले होकर गुजरना होगा। वे सब जिन्होंने उसकी व्यवस्था का पालन करके, और एक जाली सब्त को स्वीकार करने से इनकार करके, परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा सिद्ध की है, प्रभु परमेश्वर यहोवा के ध्वज के अधीन पंक्तिबद्ध होंगे, और जीवते परमेश्वर की मुहर प्राप्त करेंगे। जो स्वर्गीय उद्गम के सत्य को त्याग देते हैं और रविवार के सब्त को स्वीकार करते हैं, वे पशु की छाप प्राप्त करेंगे।” Manuscript Releases, volume 15, 15.

पशु की प्रतिमा का निर्माण उस अवधि द्वारा दर्शाया जाता है जब रोम के साथ गठबंधन किया गया था। संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रोटेस्टेंट सींग 1844 में रोम की बेटियाँ बन गया, और उनके इतिहास का आरंभ उनके इतिहास के अंत में तब दोहराया जाता है जब वे एक बार फिर अपनी माता का अनुकरण करने का निश्चय करते हैं।

मैंने देखा कि दो सींगों वाले पशु का मुँह अजगर जैसा था, और उसकी शक्ति उसके सिर में थी, और यह भी कि फरमान उसके मुँह से निकलेगा। फिर मैंने वेश्याओं की माता को देखा; कि वह माता बेटियों से अलग और भिन्न थी; वह स्वयं बेटियाँ नहीं थी। उसका दिन आकर जा चुका है, और उसकी बेटियाँ, अर्थात् प्रोटेस्टेंट संप्रदाय, मंच पर आने वाली अगली थीं और उसी विचारधारा को अमल में लाने वाली थीं जो माता की थी जब वह संतों को सताती थी। मैंने देखा कि जैसे-जैसे माता की शक्ति क्षीण होती गई, बेटियाँ बढ़ती गईं, और शीघ्र ही वे उसी शक्ति का प्रयोग करेंगी जो कभी माता ने किया था।

मैंने देखा कि नाममात्र की कलीसिया और नाममात्र के एडवेंटिस्ट, यहूदा की तरह, हमारा विश्वासघात करेंगे और सत्य का विरोध करने हेतु कैथोलिकों का प्रभाव पाने के लिए हमें कैथोलिकों के हवाले कर देंगे। तब संत एक अल्प-परिचित लोग होंगे, कैथोलिकों के लिए बहुत कम ज्ञात; परन्तु वे कलीसियाएँ और नाममात्र के एडवेंटिस्ट जो हमारे विश्वास और रीति-रिवाजों को जानते हैं (क्योंकि वे हमें सब्त के कारण घृणा करते थे, क्योंकि वे उसका खण्डन नहीं कर सकते थे) संतों का विश्वासघात करेंगे और उन्हें कैथोलिकों के पास उन लोगों के रूप में शिकायत करेंगे जो लोगों की संस्थाओं की अवहेलना करते हैं; अर्थात् वे सब्त का पालन करते हैं और रविवार की उपेक्षा करते हैं।

"तब कैथोलिक प्रोटेस्टेंटों से कहेंगे कि वे आगे बढ़ें, और यह फ़रमान जारी करें कि जो कोई सातवें दिन के स्थान पर सप्ताह के पहले दिन का पालन नहीं करेगा, उसे मार डाला जाए। और कैथोलिक, जिनकी संख्या अधिक है, प्रोटेस्टेंटों का साथ देंगे। कैथोलिक अपनी शक्ति पशु की प्रतिमा को देंगे। और प्रोटेस्टेंट संतों का नाश करने के लिए ठीक वैसा ही करेंगे जैसा उनकी माता ने उनसे पहले किया। परन्तु उनके फ़रमान के फल देने से पहले ही, संत परमेश्वर की वाणी द्वारा छुड़ा लिए जाएँगे।" स्पॉल्डिंग और मैगन, 1, 2.

उस खंड में 'नाममात्र' (अर्थात् केवल नाम के) दो समूह हैं, जो परमेश्वर के विश्वासयोग्य जनों को कैथोलिकों के हवाले कर देते हैं। एलेन व्हाइट की 'नाममात्र कलीसियाओं' और 'नाममात्र एडवेंटिस्टों' के बारे में समझ अंतिम दिनों में उनके वास्तविक अर्थ से भिन्न है, क्योंकि उनके अनुसार 'नाममात्र एडवेंटिस्ट' वह मसीही होता था जो मसीह के पुनरागमन पर विश्वास करने का दावा करता था। परन्तु भविष्यद्वक्ता जिन दिनों में वे जीते थे, उनकी अपेक्षा अंतिम दिनों के लिए अधिक बोलते हैं; और अंतिम दिनों में 'नाममात्र एडवेंटिस्ट' लाओदीकियन सेवेथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया का प्रतिनिधित्व करता है, और नाममात्र कलीसियाएँ उन लोगों की वंशज हैं जो 1844 में रोम की 'बेटियाँ' बन गए।

सेवेथ-डे एडवेंटिस्ट "गुमनाम लोगों" से नफरत करेंगे, जो परमेश्वर के सच्चे प्रतिनिधि हैं, क्योंकि वे "सब्त के सत्य का खंडन नहीं कर सकते", जो भूमि के विश्राम के सब्त का प्रतिनिधित्व करता है। सेवेथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया आराधना के दिन के रूप में सातवें दिन को मानने का दावा करती है, परन्तु अंतिम दिनों में जिस सब्त का वे खंडन नहीं कर सकते, वह लैव्यव्यवस्था छब्बीस का "सात बार" है, जो पहला आधारभूत सत्य था जिसे उन्होंने 1863 में अस्वीकार कर दिया था।

जिस अनुच्छेद पर हम अभी विचार कर रहे हैं, वह उन भविष्यसूचक गतिशीलताओं की पहचान करता है जो उस इतिहास से संबंधित हैं, जो शीघ्र आने वाले रविवार के कानून से शुरू होता है; किन्तु रविवार के कानून के बाद आने वाला अंतिम परीक्षण का इतिहास सबसे पहले संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर संपन्न होता है। रविवार के कानून के समय संयुक्त राज्य अमेरिका पूरे संसार को पशु की मूर्ति स्थापित करने के लिए बाध्य करेगा, परन्तु उस कार्य को पूरा करने से पहले वह संयुक्त राज्य अमेरिका में ही पशु की मूर्ति स्थापित कर चुका होगा।

“जब अमेरिका, जो धार्मिक स्वतंत्रता की भूमि है, अंतरात्मा पर बल प्रयोग करने और मनुष्यों को झूठे सब्त का आदर करने के लिए बाध्य करने में पोपतंत्र के साथ एक हो जाएगा, तब पृथ्वी के प्रत्येक देश के लोग उसके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किए जाएंगे।” Testimonies, volume 6, 18.

“विदेशी राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका के उदाहरण का अनुसरण करेंगे। यद्यपि वह अग्रणी है, तौभी यही संकट संसार के सब भागों में रहने वाले हमारे लोगों पर आएगा।” Testimonies, volume 6, 395.

परमेश्वर के लोगों के लिए महान परीक्षा रविवार के कानून से पहले होती है, क्योंकि रविवार के कानून के समय सातवें दिन के एडवेंटिस्टों के लिए अनुग्रह का समय समाप्त हो जाता है। यह परीक्षा पशु की प्रतिमा के निर्माण के रूप में दर्शाई गई है, और पशु की प्रतिमा कलीसिया और राज्य के संयोजन का रूप है, जिसमें कलीसिया इस संबंध पर नियंत्रण रखती है। जैसे 1844 में प्रोटेस्टेंट रोम की पुत्री बन गए थे, और पुत्री अपनी माता की प्रतिमा होती है, वैसे ही धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंट अंतिम दिनों में एक समानांतर कार्य को अंजाम देंगे, क्योंकि यीशु हमेशा किसी बात का अंत उसके आरंभ से दर्शाते हैं।

दानियेल अध्याय ग्यारह के तेईसवें पद की “संधि” द्वारा दर्शाया गया इतिहास यह दिखाता है कि वैभवशाली देश के नामधारी धर्मत्यागी लोग रोम के साथ गठबंधन करने के लिए हाथ बढ़ा रहे थे। 161 ई.पू. से 158 ई.पू. वह काल है जो पशु की छवि के निर्माण का प्रतिनिधित्व करता है, जो रविवार के कानून पर आकर चरम पर पहुँचता है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

“परन्तु ‘पशु की मूरत’ क्या है? और वह किस प्रकार बनाई जाएगी? यह मूरत दो-सींगवाले पशु द्वारा बनाई जाती है, और वह उस पशु की मूरत है। उसे ‘पशु की मूरत’ भी कहा गया है। अतः यह जानने के लिए कि यह मूरत कैसी है और वह किस प्रकार बनाई जाएगी, हमें स्वयं उस पशु—अर्थात् पोपसत्ता—की विशेषताओं का अध्ययन करना होगा।”

“जब प्रारम्भिक कलीसिया सुसमाचार की सरलता से हटकर भ्रष्ट हो गई और उसने अन्यजातीय रीति-रिवाजों और प्रथाओं को ग्रहण कर लिया, तब उसने परमेश्वर की आत्मा और सामर्थ्य को खो दिया; और लोगों के विवेक पर नियंत्रण रखने के लिए उसने लौकिक सत्ता का सहारा लिया। इसका परिणाम पोपतंत्र के रूप में हुआ, अर्थात् ऐसी कलीसिया जो राज्य की शक्ति को नियंत्रित करती थी और उसे अपने ही उद्देश्यों की उन्नति के लिए, विशेषकर ‘विधर्म’ के दण्ड के लिए, प्रयोग में लाती थी। संयुक्त राज्य के लिए पशु की एक मूरत बनाने हेतु यह आवश्यक है कि धार्मिक शक्ति नागरिक सरकार पर ऐसा नियंत्रण स्थापित करे कि राज्य का अधिकार भी कलीसिया द्वारा अपने ही उद्देश्यों की सिद्धि के लिए प्रयोग में लाया जाए।” The Great Controversy, 443.